स्वराज युनिवर्सिटी

उद्देश्य

स्वराज युनिवर्सिटी का मकसद 21वीं सदी के लिए ऐसे युवा पथ–प्रदर्शक तैयार करना है जो स्वराज की भावना को समझकर नवीन प्रयोग करें, साथ ही स्थानीय स्तर पर समाज एवं पर्यावरण की दृश्टि से उपयोगी एवं सार्थक उद्यम को जन्म दें।

स्वराज का सही अर्थ है – खुद के सीखने और जीने की प्रकिया जिसमे स्वयं का नियंत्रण हो, जिससे एक सुदृढ़ और सुखी समाज की रचना हो सके ।

स्व–रचित शिक्षा

स्वराज युनिवर्सिटी में भागीदार हर खोजी इस बात का फैसला कर सकेगा कि वह क्या, कब, कैसे और किससे सीखना चाहता है। प्रत्येक के पास ऐसे अवसर होंगे किः–

- वह स्वयं की सीखने की प्रक्रिया एवं रूचियों को पहचाने ताकि पूरी जिज्ञासा, जोश और आनंद से सीख सके।
- वह आधुनिकता, स्वयं के जीवन मूल्यों और मान्यताओं पर पुनर्विचार करे जिसके फलस्वरूप सीखने में निरन्तर नवीन प्रयोग, आदान–प्रदान व जुगाड़ कर सके।
- वह स्वयं के लिए उपयुक्त सीखने के मार्ग चुने व विभिन्न विषयों के उस्तादों और अनुभवी लोगों से सीखे।
- वह अपने से छोटी या बड़ी उम्र के लोगों अर्थात् हर वर्ग को स्वयं के सीखने की प्रक्रिया से जोड़ सके।
- वह स्व–मूल्यांकन के तरीके अपना कर सीखने के रास्ते बनाये और स्वस्थ सीखने की प्रक्रिया में आपसी सुझाव, सलाह–मशवरा व सवांद को कायम रखे।
- वह स्वयं के स्थानीय समुदाय को केन्द्र बनाकर सीखे जिसमें क्षेत्रीय, विश्व–स्तरीय संवाद एवं आदान–प्रदान की भी उसके सीखने की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका होगी।

सीखने की इस प्रक्रिया में खोजियों के दिल, दिमाग और शरीर का समग्र विकास होगा। इसमें वे भेड़–चाल की नौकरी करने के बजाय स्वयं की रूचियों से समाज और पर्यावरण हेतु आवश्यक एवं नवीन कार्यों की स्थापना करेंगे। 21वीं सदी की चुनौतियों को देखते हुए नये कार्यों या आजीविका के मौके उनके सामने रखे जायेंगे।

विचारशील परिवर्तन के कुछ ऐसे उदाहरण

जैविक (देशी) खेती एवं 'ऑर्गेनिक' हाट

देशी एवं स्थानीय खाद्य सामग्री से पौष्टिक भोजन

स्व–उपचार एवं परम्परागत स्व–चिकित्सा

प्राकृतिक रेशों एवं रंगों (हर्बल डाइस) से बने कपड़ों से नए फैशन

इको–फ्रेण्डली घर बनाने के तरीके

वैकल्पिक ऊर्जा

अन्ततः कोई खोजी इस कार्यक्रम से क्या और कितना हासिल करता है, यह काफी हद तक खुद पर निर्भर होगा। यहाँ उसके समग्र विकास के लिए स्वस्थ एवं पौषक वातावरण का निर्माण किया जायेगा। तीन वर्ष के इस स्व–रचित कार्यक्रम की मुख्य रूपरेखा कुछ इस प्रकार होगी–

पहला वर्ष – इस वर्ष में सीखने के कार्यक्रम की नींव रखने का कार्य होगा। इसमें पूर्व की स्कूली मान्यताओं, पाठ्यक्रम, मानसिकताओं पर मन्थन व पुनर्विचार करना शामिल होगा। इस वर्ष में खोजी को आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति व जुगाड़ के हुनर को विकसित करने का मौका मिलेगा। साथ ही वह स्वयं की आजीविका के रास्ते भी पहचान पायेगा, ऐसी हमारी आशा है।

दूसरा वर्ष – दूसरे वर्ष का मुख्य लक्ष्य गहराई से अपने कार्यक्षेत्र और समुदाय के बारे में ज्ञान बढ़ाना है। इसके लिए खोजी को विभिन्न सामाजिक वातावरणों में अनुभव प्राप्ति के अवसर मिलेंगे– जैसे ग्राम्य जीवन को समझना, सामाजिक आंदोलनों, स्वयं–सेवी संस्थाओं व

प्रेरणादायी कार्यकर्ताओं के साथ कार्य करना। इस दौरान खोजी को अपने विचारों के लिए समर्थन हासिल करने एवं नैतृत्व करने की कुशलता प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

तीसरा वर्ष – इस वर्ष का मकसद उपयुक्त आजीविका का फैसला एवं खुद के सम्पर्क बढ़ाना है। इस वर्ष में खोजी अपने मन में जो सपने हैं उसे वास्तविकता में लाने की तैयारी करेगा। उसे इसके लिए आवश्यक कुशलता प्राप्त करने के लिए अलग–अलग प्रकार की कार्यशालाओं में सहभागी होने का मौका मिलेगा। इसमें स्वयं के हुनर पर आधारित व्यवसाय, संस्था या कोई भी काम शुरू करने के लिए आवश्यक ज्ञान जैसे मार्केटिंग, फाईनेन्स, इत्यादि विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । इसमें स्वयं के प्रयोगों को मूर्त्त रूप देने का भी प्रयास होगा।

प्रत्येक खोजी द्वारा चुने मार्ग पर उसकी सहायता और विकास के लिए अनेक साधन उपलब्ध होंगे। जैसेः–

- अन्य सह–खोजियों से भेंट और संवाद

- खोजी को ध्यान में रखकर अप्रेंटिसशिप जिसमें वह उसके चुने हुए विषय में किसी उस्ताद के साथ रहकर काम करेगा।
- विभिन्न कार्यशालाओं में सहभागिता।
- समाजसेवी संस्थाओं व आन्दोलनों के साथ कार्यानुभव।
- ज्ञानवर्धन और अनुभव प्राप्ति के लिए विशेष यात्राएँ।
- अन्तर्राष्ट्रीय युवा संवादों में सहभागिता।
- विविध प्रकार के संस्थानों में इंटर्नशिप के अवसर।

प्रत्येक खोजी खुद के विचार, लेखन, अनुभव, फोटो, ज्ञान इत्यादि का संकलन स्व–निर्मित तरीके जैसे पोर्टफोलियों से प्रदर्शित कर सकेगा।

खोजी के सह–शिक्षण में सहयोगी समूह

हमारा शोध और अनुभव यह बताता है कि स्व–रचित शिक्षा एक सामुहिक प्रक्रिया में ही सुंदरता से उभर सकती है। इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप देने के लिए तरह–तरह के सहयोगियों की आवश्यकता रहेगी। इसके लिये हर खोजी अपना एक सहयोगी समुदाय बनाएगा।

हमारे उस्ताद

इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आपके उस्ताद के साथ गहरे रिश्ते का निर्माण करना है। खोजियों को अपनी रूचि के क्षेत्रों में कार्यरत उल्लेखनीय एवं अनुभवी उस्तादों के साथ कार्य करने का मौका मिलेगा। यह रिश्ता दोस्ती और सह–शिक्षण की भावना पर आधारित होगा। इस कार्यक्रम के कुछ उस्ताद इस प्रकार हैंः–

क्लॉड एल्वरस, (गोवा) – क्लॉड आधुनिकता एवं शिक्षा के वि"ायों पर आलोचनात्मक लेखन के लिये प्रसिद्ध हैं। पत्रकारिता एवं एक्टिविज़्म पर अपने उत्साह और लगन के चलते उन्होंने एक

अनुठे प्रकाशन संस्थान और पुस्तक भण्डार की शुरूआत की, जहाँ पर शिक्षा एवं पर्यावरण पर वैकल्पिक नजरियों को प्रस्तुत करने के साथ–साथ ऐसे अन्य मुद्दों को भी उजागर किया जाता है जिन्हें व्यवस्था की मुख्यधारा उपेक्षित कर देती है। क्लॉड पर्यावरण सम्बन्धी कानूनी मुद्दों पर गहन अध्ययन एवं ज्ञान रखते हैं और गोवा के पर्यावरण सन्तुलन को बनाये रखने के लिये उन्होंने अमूल्य योगदान दिया है।

अन्जु उप्पल, (अम्बरनाथ, महाराष्ट्र) – अन्जु और उनके पति प्रोबिर, मीडिया मैटर्स नामक एक संस्था चला रहे हैं, जो उपेक्षित वर्ग के अधिकारों और सम्मान के लिए कार्य करती है। उनकी संस्था सामाजिक मुद्दों पर सहभागितापूर्ण तरीके से रोचक नाटक बनाती है। अन्जु एक लेखिका, नाट्यकर्मी एवं प्रखर मीडिया एक्टिविस्ट भी हैं।

दीपक सचदे, (हरदा, मध्यप्रदेश) – दीपक सचदे एक बहुत ही अलग तरह के किसान हैं। उन्हें जैविक या प्राकृतिक खेती में गहन ज्ञान है एवं वे उसके प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। वे

लोगों को धरती, पेड़ों और इको–सिस्टम से जोड़ने में माहिर हैं। वर्तमान में वे कीट नाशकों एवं रासायनिक उर्वरकों से धरती को बचाने के प्रयासों में लगे हैं।

युनिवर्सिटी के अनोखे परिसर

स्वराज युनिवर्सिटी का मानना है कि ज्ञान केवल सीमित इमारतों में ही प्राप्त नहीं होता, बल्कि समस्त जगत ही हमारा विद्यालय है। विभिन्न समाज–सम्प्रदायों और प्रेरणादायी व्यक्तियों को जानने का सर्वोत्तम तरीका यही है कि हम स्वयं उनके पास पहुँचे। इसलिए पहली बार हमने बदलते केम्पस की कल्पना की है। किसी एक स्थायी परिसर पर मिलने के बजाय सभी सह–खोजी कुछ महिनों के अन्तराल में विभिन्न परिसरों में एकत्रित होते रहेंगे जहाँ वे एक दूसरे के साथ विचार विमर्श और अपने शिक्षण का आदान–प्रदान कर पायेंगे। ऐसे केम्पस राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में होंगें।

इसके पश्चात्...

हमारा पूरा विश्वास है कि इस शिक्षण की अवधि के अंत तक खोजी का आत्मविश्वास इतना बुलंद होगा कि वह अपने विचारों को खुद के बल पर हकीकत में बदल सके और अपने आस–पास के लोगों को अपनी निष्ठा और मेहनत से प्रेरित कर पाए।
उसके पास इस महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य के लिए आवश्यक गहरा अनुभव, ज्ञान और विश्वास होगा। साथ ही वह अपने आस–पास के संसाधनों को जुटाकर अपने समुदाय में आजीविका का काम शुरु कर सकेगा।